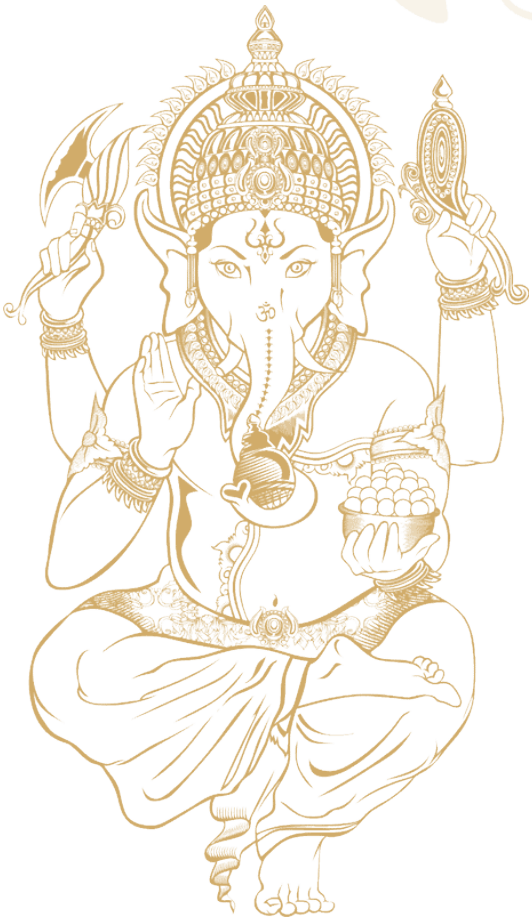

Mr.siddharth

Ms.pallvi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119173501

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119173501 Date: 21/08/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18/08/1996	जन्म तिथि	04/12/1999
रविवार	दिन	शनिवार
घंटे 13:17:00	जन्म समय	07:57:00 घंटे
घटी 18:22:22	जन्म समय(घटी)	01:40:16 घटी
India	देश	India
Jammu	स्थान	Jammu
32:42:00 उत्तर	अक्षांश	32:42:00 उत्तर
74:52:00 पूर्व	रेखांश	74:52:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:30:32	स्थानिक संस्कार	-00:30:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:56:03	सूर्योदय	07:16:53
19:12:00	सूर्यास्त	17:24:11
23:48:40	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:06
वृश्चिक	लग्न	वृश्चिक
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
कन्या	राशि	तुला
बुध	राशि-स्वामी	शुक्र
हस्त	नक्षत्र	चित्रा
चन्द्र	नक्षत्र स्वामी	मंगल
2	चरण	4
साध्य	योग	सौभाग्य
विष्टि	करण	कौलव
ष-षडबली	जन्म नामाक्षर	री-रीतिका
सिंह	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
वैश्य	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
महिष	योनि	व्याघ्र
देव	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	मध्य
मेष	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 5वर्ष 2मा 28दि		03:47:58	वृश्चि	लग्न	वृश्चि	25:21:44	मंगल 0वर्ष 6मा 27दि	
राहु		01:49:54	सिंह	सूर्य	वृश्चि	17:37:22	गुरु	
15/11/2008		16:20:26	कन्या	चंद्र	तुला	05:34:14	02/07/2018	
16/11/2026		21:47:55	मिथु	मंगल	मक	12:08:24	02/07/2034	
राहु	30/07/2011	28:57:07	सिंह	बुध	तुला	27:24:43	गुरु	19/08/2020
गुरु	22/12/2013	14:25:29	धनु व	गुरु व	मेष	01:37:53	शनि	02/03/2023
शनि	28/10/2016	16:06:20	मिथु	शुक्र	तुला	04:00:33	बुध	07/06/2025
बुध	18/05/2019	12:49:43	मीन व	शनि व	मेष	17:46:46	केतु	14/05/2026
केतु	04/06/2020	14:47:56	कन्या	राहु व	कर्क	11:28:58	शुक्र	12/01/2029
शुक्र	05/06/2023	14:47:56	मीन	केतु व	मक	11:28:58	सूर्य	31/10/2029
सूर्य	28/04/2024	07:52:14	मक व	हर्ष	मक	19:44:31	चन्द्र	02/03/2031
चन्द्र	28/10/2025	01:46:23	मक व	नेप	मक	08:26:39	मंगल	06/02/2032
मंगल	16/11/2026	06:32:23	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	16:32:00	राहु	02/07/2034

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:40 चित्रपक्षीय अयनांश 23:51:06

लग्न-चलित

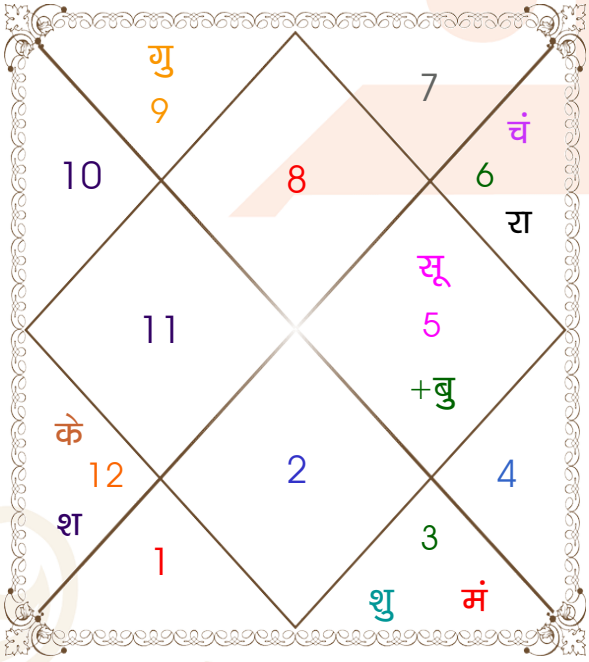

लग्न-चलित

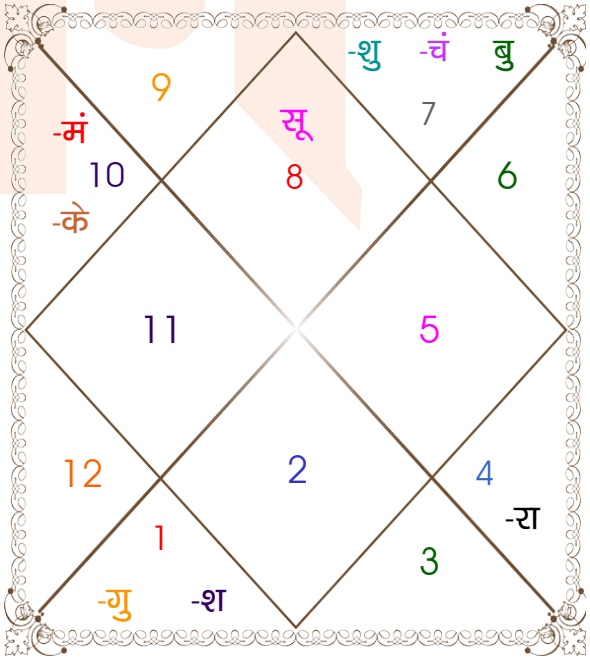

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	महिष	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

कुल : **21 / 36**

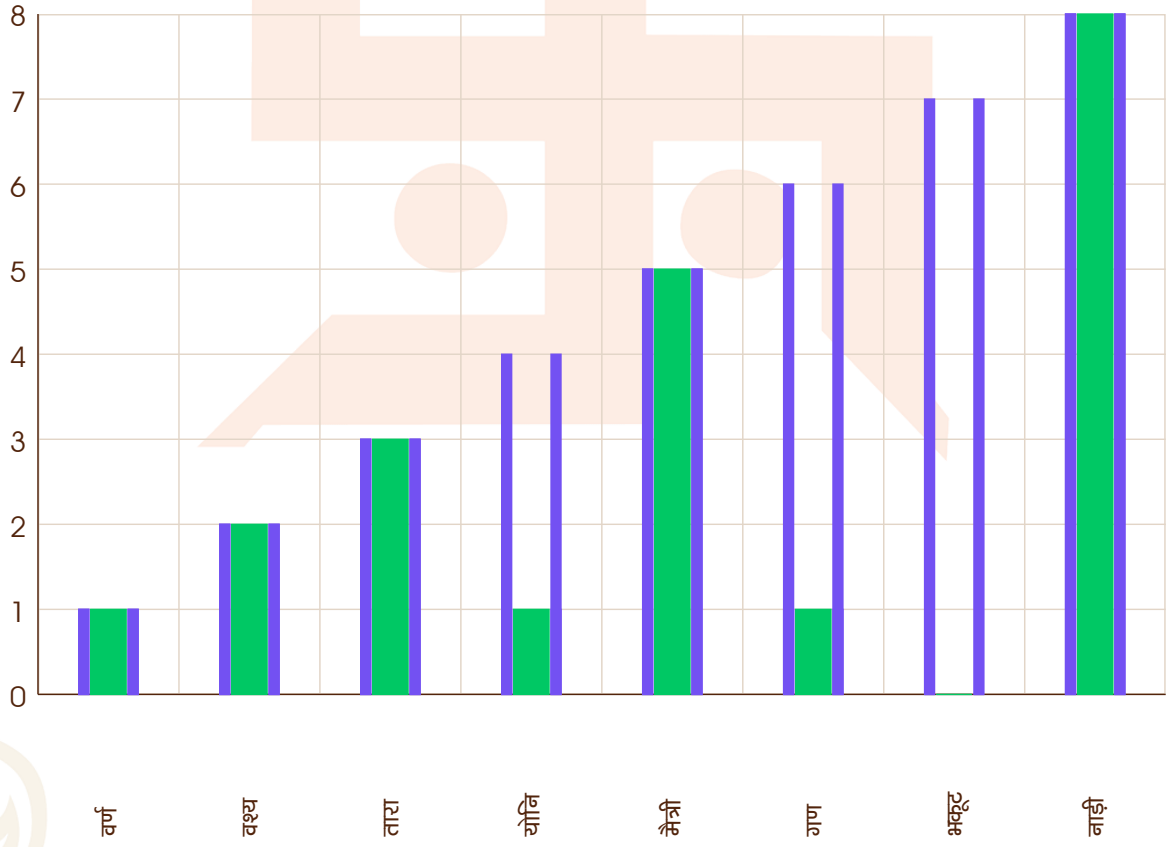

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण्पककींतजी का वर्ग मेष है तथा डेण्चंससअप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्पककींतजी और डेण्चंससअप का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्पककींतजी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

डेण्चंससअप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्चंससअप कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्पककींतजी तथा डेण्चंससअप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डतण्पककींतजी का वर्ण वैश्य है तथा डेण्चंससअप का वर्ण शूद्र है। इसमें डेण्चंससअप का वर्ण डतण्पककींतजी के वर्ण से नीचा है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप डेण्चंससअप अति आज्ञाकारी, सहायता करने वाली तथा बिना किसी शिकायत के पूरे परिवार की सेवा-सुश्रुषा एवं देखभाल करने वाली होगी। साथ ही हर किसी की सेवा के लिए डेण्चंससअप हमेशा तत्पर रहेगी। बिना उचित कारण के वह किसी के साथ तर्क-वितर्क अथवा झगड़ा नहीं करेगी।

वश्य

डतण्पककींतजी का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं डेण्चंससअप का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। डतण्पककींतजी एवं डेण्चंससअप दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

डतण्पककींतजी की तारा अतिमित्र तथा डेण्चंससअप की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। डतण्पककींतजी हमेशा डेण्चंससअप के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

डतण्पककींतजी की योनि महिष है तथा डेण्चंससअप की योनि व्याघ्र है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र

की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डतण्पककींतजी एवं डेण्चंससअप दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि डतण्पककींतजी एवं डेण्चंससअप के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण डतण्पककींतजी एवं डेण्चंससअप जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

डतण्पककींतजी का गण देव तथा डेण्चंससअप का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में डेण्चंससअप निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। डेण्चंससअप की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

भकूट

डतण्पककींतजी से डेण्चंससअप की राशि द्वितीय भाव में स्थित है तथा डेण्चंससअप से डतण्पककींतजी की राशि द्वादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके कारण डतण्पककींतजी गुस्सैल एवं लड़ाकू स्वभाव के हो सकते हैं। साथ ही शारीरिक रूप से कमजोर तथा अपव्ययी होंगे। डेण्चंससअप समझौतावादी, सौम्य एवं दयालु प्रवृत्ति की होंगी तथा अपने कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को आसानी से बखूबी निभाती रहेंगी तथा बचत भी करती रहेगी। दूसरी ओर डतण्पककींतजी शाहखर्च, लापरवाह एवं अय्याशी में पैसे बर्बाद करने वाले हो सकते हैं।

नाड़ी

डतण्पककींतजी की नाड़ी आद्य है तथा डेण्चंससअप की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का मिलान अति उत्तम माना जाता है क्योंकि इसमें जीवन के तीन आवश्यक घटकों में से दो वात एवं पित्त का समन्वय है। जीवन के

अस्तित्व के लिए वात एवं पित्त का समन्वय आवश्यक है। जिसके कारण आपकी संतान काफी बुद्धिमान, स्वस्थ, मानसिक रूप से दृढ़ एवं सौभाग्यशाली होंगी। जो भौतिकवादी विश्व में सुविधा संपन्न जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

मेलापक फलित

स्वभाव

डतण्पकर्कीतजी की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या तथा डेण्चंससअप की राशि वायुतत्व युक्त तुला राशि है। पृथ्वी तथा वायु तत्व में विषमता होने के कारण डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप के मध्य यदा कदा अनावश्यक मतभेद उत्पन्न होंगे परन्तु सामंजस्य की प्रवृति होने के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः मिलान सामान्य से अच्छा रहेगा।

डतण्पकर्कीतजी की राशि का स्वामी बुध तथा डेण्चंससअप की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर मित्र भावों में पड़ते है। अतः इसके शुभ प्रभाव से डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप का दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा परस्पर संबधों में भी मधुरता रहेगी। एक दूसरे के गुणों की ये प्रशंसा करेंगे तथा सच्चे मित्र की भांति कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही परस्पर प्रेम सहानुभूति सहयोग तथा समर्पण की भावना विद्यमान होगी तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

डतण्पकर्कीतजी एवं डेण्चंससअप की जन्म राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से यदा कदा डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप के मध्य परस्पर विवाद एवं मतभेद उत्पन्न होंगे तथा आर्थिक स्थिति में भी विषमता रहेगी जिससे संबधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा परन्तु यदि ये धैर्य एवं सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो इन्का जीवन सुख पूर्वक व्यतीत हो सकता है।

डतण्पकर्कीतजी एवं डेण्चंससअप दोनों का वश्य मानव है। अतः इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं समान होंगी। साथ ही दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

डतण्पकर्कीतजी का वर्ण वैश्य तथा डेण्चंससअप का वर्ण शूद्र है। अतः डतण्पकर्कीतजी की प्रवृति धनार्जन सम्बन्धी कार्यों में रहेगी परन्तु डेण्चंससअप किसी पूर्व चुनाव के परिश्रम एवं ईमानदारी से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी। अतः कार्य क्षेत्र में स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

डेण्चंससअप की तारा सम्पत तथा डतण्पकर्कीतजी की तारा अतिमित्र है। इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। डेण्चंससअप धनवान एवं भाग्यवान होंगी तथा डेण्चंससअप के सौभाग्य से डतण्पकर्कीतजी की आर्थिक स्थिति नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेगी। डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप दोनों की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में स्थित है जो भकूट दोष माना जाता है। लेकिन मंगल

का आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव सम रहेगा। अतः सामान्यतया डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप समृद्ध एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे।

भकूट दोष के प्रभाव से डेण्चंससअप की प्रवृति अत्यधिक व्ययशील होगी तथा भौतिक साधनों में वह काफी व्यय करेंगी लेकिन उनकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा समस्त सुखों का उपभोग करते हुए इनका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

स्वास्थ्य

डतण्पकर्कीतजी का आद्य तथा डेण्चंससअप की मध्य नाड़ी में जन्म हुआ है। अतः नाड़ी दोष का इन पर कोई प्रभाव नहीं होगा लेकिन मंगल के दुष्प्रभाव से डेण्चंससअप को समय समय पर स्वास्थ्य संबधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से साथ ही गुप्त रोग या अन्य रक्त अथवा पित संबधी परेशानियां समय समय पर उत्पन्न होंगी। इसके अतिरिक्त मासिक धर्म की अनियमिता से भी वे कष्ट की प्राप्ति करेंगी। अतः इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए डेण्चंससअप को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए।

संतान

संतति की दृष्टि से डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप को उचित समय पर संतति प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार से विलम्ब या व्यवधान नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उचित मात्रा में उनका पालन पोषण करने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप के पुत्र एवं कन्याओं की संख्या बराबर रहेगी।

डेण्चंससअप का प्रसव सामान्य रूप से होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार से परेशानी या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही किसी प्रसूति संबधी चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः डेण्चंससअप के मन में इसके प्रति जो अनावश्यक भय या चिन्ताएं रहती है उसको दूर कर देना चाहिए तथा नियमित रूप से गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण करवाने चाहिए। इस प्रकार डेण्चंससअप सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा स्वयं भी शांति तथा स्वस्थता की अनुभूति करेंगी।

बच्चों के द्वारा डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप को पूर्ण सन्तुष्टि मिलेगी तथा अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं व्यवहार कुशलता से वे अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे यद्यपि माता पिता के वे आज्ञाकारी रहेंगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथापि माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार डतण्पकर्कीतजी और डेण्चंससअप का पारिवारिक जीवन सुख तथा शांति से पूर्ण रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

डेण्चंससअप के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत डेण्चंससअप के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

डेण्चंससअप अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार डेण्चंससअप के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

डतण्पकर्कीतजी के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा डतण्पकर्कीतजी अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी डतण्पकर्कीतजी का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में डतण्पकर्कीतजी का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि डतण्पकर्कीतजी तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में डतण्पकर्कीतजी के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।